GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

भारतीय संस्कृति के अनुकूल भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप के संबंध में स्वामी दयानंद सरस्वती जी का विचार

प्रोफेसर सुषमा पांडेय
शिक्षाशास्त्र विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

भारत के पावन धरती पर महापुरुषों की उत्पत्ति समाज की दशा एवं दिशा दोनों को प्रभावित करती रही है। शताब्दियों तक परतंत्रता ने राष्ट्र के रूप में भारत को असहनीय क्षति पहुंचाई तो दूसरी ओर समाज को इस निराशा से निकलने के लिए और आत्मविश्वास तथा भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न करने का प्रयास पुनर्जागरण तथा सामाजिक सुधार आंदोलन के रूप में 19वीं शताब्दी के मध्य में जो भारत में प्रारंभ हुआ उसमें स्वामी दयानंद सरस्वती जी की भूमिका अत्यंत सार्थक रही है । महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्म गुजरात के काठियावाड़ प्रांत के मोरबी रियासत के टंकारा गांव में हुआ थाउनके पूर्वज ब्राह्मण थेपूर्णपिता एक संपन्न सद्गृहस्थ थे और मोरबी राज्य ने राजस्व संग्रह का पदाधिकारी नियुक्त किया था पिता पंडित तिवारी परंपरागत रूप से शिव उपासक ब्राह्मण थे। दयानंद जी के बचपन का नाम मूल शंकर था । 8 वर्ष की आयु में उनका यज्ञोपवीत संस्कार हो गया था।बचपन में वह स्वयं भगवान भोलेनाथ की उपासना करते-करते उनके पिंडी पर एक चूहे को स्वच्छंद भी चढ़ते हुए देखकर उनके मन आशंका और अविश्वास से भर गया।यह घटना मूल शंकर के चिंतन को विचलित कर गई और उन्होंने 21 वर्ष की आयु में अपना घर त्याग दिया अब उनके जीवन के दो ही उद्देश्य रह गए थे ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना और उनको प्राप्त करने के लिए योग और साधना करना।योगी की तलाश करते हुए विशुद्ध चैतन्य बड़ौदा के चेतन मठ में पहुंचे और उनके संपर्क में आने के बाद शुद्ध चैतन्य की आस्था अद्वैत वेदांत के रूप में उनके मन में दृढ़ हो गई। अब वह अति शीघ्र योग साधना करना चाहते थे। उन्होंने संन्यास ग्रहण करने की इच्छा जताई और पूर्णानंद ने उन्हें संन्यास देना स्वीकार कर लिया और सभी विधि विधान पूर्वक परिव्राजक की दीक्षा लेने के पश्चात वे दयानंद सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हो गएऔर यहां से उनका दयानंद सरस्वती के रूप में जीवन प्रारंभ हुआ।उन्होंने देशभर का भ्रमण किया और अनेक साधु संत महात्माओं से मिले वहां पर उपलब्ध साहित्य ज्योतिष व्याकरण तथा तंत्र ग्रंथ के परिसिलन का कार्य किया। स्वामी विरजानंद सरस्वती जीस्वामी दयानंद जी के गुरु थे उन्होंने उन्हें वेद, सत्य शास्त्रों का ज्ञान पुरातन काल के ऋषियों द्वारा रचित ग्रंथ के प्रचार प्रसार में दीक्षित किया।इस प्रकार से भोजन तथा आवास की चिंता से मुक्त होकर विद्याविलाषी दयानंद सरस्वती जी नेस्वतंत्र भाव से गुरु के चरणों में

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

अपना मन अध्ययन में लगा दिया।उन्होंने धर्म, दर्शन, कर्मकांड, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान की सभी विधाओं में लिखे गए अनेक का अध्ययन किया।अपने अध्ययन काल में गुरु को प्रसन्न रखने के लिए गुरु के सभी प्रकार के व्यवहार को आशीर्वाद स्वरूप ग्रहण किया । अध्ययन के पश्चात दीक्षांत वचन के रूप में बिरजानंद जी ने उनसे कहा की- संपूर्ण भारत समाज अनेक सांप्रदायिक विभेद नाना प्रकार के मूर्ति-पूजा और कर्मकांड से ग्रसित है । वास्तविक जनकल्याणकारी वैदिक धर्म कहीं भी दिखाई नहीं देता है।मेरा तुमसे यह अनुरोध है कि सांप्रदायिक पाखंडों के मुंडन के लिए कटिबंध हो जो वेदों और प्राचीन ग्रंथो के आलोक से समाज को आलोकित करो । यही मेरा तुम्हारे लिए दीक्षांत वचन है।अपने गुरु को दिए हुए इस वचन को पूरे आयु भर स्वामी दयानंद सरस्वती जी निर्वहन करते रहे।

महर्षि का प्रयत्न था कि भारत में प्रचलित हिंदू संप्रदाय में जिन वेदों और मंतव्य का समावेश हो गया है उनका निराकरण कर सत्य सनातन वैदिक धर्म के विशुद्ध स्वरूप को पुनः स्थापित किया जाए और सच्चे अर्थ में भारत को आर्य बनाया जाए और उसके नेतृत्व में संपूर्ण मानव समाज का हित और कल्याण विश्व में संपादित हो सके । महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज ने विदेशी प्रभाव से भारतीयों को मुक्त रखकर भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता से प्रभावित करने का प्रयत्न करने हेतु दयानंद एंग्लो-वैदिक विद्यालयों तथा गुरुकुलों की स्थापना किया । आर्य समाज द्वारा स्थापित और संचालित अनेक ऐसी संस्थाएं हैं जो विद्या की वृद्धि के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के मूल्य एवं आदर्शों को भी समाकलन करने का प्रयास करती हैं। आर्य समाज द्वारा संचालित सभी शिक्षण संस्थाओं का वातावरण वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के अनुरूप है जहां उन्होंने सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनः स्थापना का प्रयास किया वहां दूसरी ओर उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक प्रकार की बुराइयों का भी निराकरण करने का प्रयास किया।स्वामी दयानंद सरस्वती जी का भारतीय समाज के उत्थान में अमूल्य योगदान है । उन्होंने समाज के उन्नयन हेतु जो कार्य किया उसकी अब छाप आज भी हमें दिखाई पड़ती है।स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों से यह स्पष्ट है कि वह यह जानते थे कि भारत के गौरवशाली संस्कृति एवं सभ्यता का समाकलन भारतीय जनमानस पर शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है इसीलिए उन्होंने भारत के लिए भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षा संबंधी अपना वृहद विचार रखा अतः इस शोध पत्र मेंस्वामी दयानंद सरस्वती जी के शिक्षा संबंधी विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य-

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं।

1. शिक्षा के स्वरूप एवं आवश्यकता के संबंध में स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों का अध्ययन करना।
2. स्वामी दयानंद सरस्वती जी के अनुसार शिक्षा के अभिप्राय की विवेचना करना।
3. स्वामी दयानंद सरस्वती जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य एवं सिद्धांतों का अध्ययन करना।
4. शिक्षा में पाठ्यक्रम के संबंध में स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों को जानना ।
5. शिक्षण प्रविधि के संबंध में स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों को जानना।
6. विद्यालय के स्वरूप एवं विद्यालय अनुशासन के संबंध में दयानंद सरस्वती जी के विचारों का अध्ययन करना।
7. गुरु शिष्य संबंध के विषय मेंदयानंद सरस्वती के विचारों को जानना ।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी युग द्दष्टा थे। उनका उद्भव भारत के पराभाव कल में हुआ उसे समय राजनीतिक दृष्टि से भारत परतंत्र सामाजिक दृष्टि से पूर्णतया अपवंचित धार्मिक दृष्टि से पाखंड एवं अज्ञानता से पूर्णतया आच्छादित और शैक्षिक दृष्टि से पूर्णतया पिछड़ा हुआ था। महर्षिदयानंद जी ने जब आर्य समाज की स्थापना की तो उनका मुख्य उद्देश्य विद्या की वृद्धि करना था। वे जानते थे कि भारतीय समाज को पुनरुत्थान की आवश्यकता है।अनेक प्रकार के पाखंडों से युक्त समाज में बुरी तरह से धर्मांतरण हो रहा था।लोग अपनी संस्कृति से दूर पाश्चात्य दर्शन, वेशभूषा, भाषा की ओर खिंचे चले जा रहे थे। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया था।ऐसी दशा में महर्षि दयानंद जी ने शिक्षा के ऐसे स्वरूप का विचार किया जिसमें भारत की संस्कृति परंपराओं मूल्य आदर्श एवं अध्यात्म का समावेश था । जो प्राचीन वेद शास्त्रों के अध्ययन के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान के अध्ययन को भी महत्व दिया जा रहा था। शिक्षा किसी एक वर्ग तक सीमित न होकर समाज में शिक्षा के प्रचार प्रसार पर जोर दिया जाने की बात कही गई।अंग्रेजों द्वारा स्थापित मिशनरिया पूरी तरह से हिंदुओं को ईसाई बनाने का कार्य कर रही थी।महर्षि दयानंद जी ने उनके इस कार्य को रोकने के लिए शास्त्रार्थ करने के साथ-साथ सत्यार्थ प्रकाश में ईसाई मत का खंडन किया और भारतीय बच्चों के लिए एक समुचित शिक्षा व्यवस्था प्रस्तुत की।

शिक्षा का अभिप्राय-स्वामी दयानंद जी के अनुसार शिक्षा और ज्ञान दोनों एक बराबर है उनके अनुसार शिक्षा विद्या में विलास करने वाले मां का निर्माण करती है अर्थात शिक्षा विद्या की प्राप्ति है और विद्या प्राप्ति में जब

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

व्यक्ति अपनी शक्तियों को समाजकलित करता है उसके परिणाम स्वरुप है शिक्षा प्राप्त करता हैइससे यह स्पष्ट हो रहा है कि दयानंद सरस्वती जी ने शिक्षा की प्रक्रिया को नहीं विषय वस्तु अथर्व पाठ्यक्रम को अधिक बल दिया है।दयानंद सरस्वती जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ शरीर का निर्माण इंद्रियों की साधना वैदिक शक्तियों का विकास और अध्यात्म का समाकलन है। इसीलिए वह मानते थे की शिक्षा का कार्य करने वाले गुरु को विद्वान चरित्रवान एवंसर्वोत्तम मानवीय गुना से परिपूर्ण होना चाहिए।

शिक्षा के उद्देश्य- दयानंद सरस्वती जी आनंद मार्गी थे और आशावादी थे इसलिए उन्होंने यह माना कि विद्या के बिना मानव को सुख नहीं मिलता इसीलिए धर्मार्थ मोक्ष के लिए मानव को विद्या प्राप्त करनी चाहिए।

1. शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को यथार्थ ज्ञान प्रदान करयोग्य व्यवहार करने योग्य बनाया जाए एवं दूसरों को भी उस आनंद की प्राप्ति हो।
2. शिक्षा का उद्देश्यउत्तम गुना का निर्माण एवं सदाचार तथा नैतिकता का विकास करना है।
3. सच्ची शिक्षा वह है जो मानव में सद्ज्ञान तथा ईश्वर की प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त कर सके।
4. शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में सामाजिक सुधार की योग्यता विकसित करना है।
5. शिक्षा के द्वारा बालक के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया जाना चाहिए।

शिक्षा के सिद्धांत- दयानंद जी के शिक्षा संबंधी विचार से कुछ सिद्धांत स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं जिनको नीचे दिया जा रहा है।-

1. शिक्षा सभी को समान रूप से प्रदान की जाए।शिक्षा से किसी को भी वंचित नहीं किया जा सकता समाज के सभी वर्ग को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा पाने का अधिकार हैI महर्षि दयानंद ने स्पष्ट किया मनुष्य मात्र को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार का समर्थन किया है और यह कहा है कि किसी को भी शिक्षा के अधिकार से वंचित नहीं रखा जा सकता।
2. समाज में स्त्रियों के समान स्थिति और शिक्षा के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने स्पष्ट समर्थन करते हुए कहा कि-अथर्ववेद के मंत्र में ही स्पष्ट किया गया है की कन्याए भी गुरुकुलु में रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करती थी उसके बाद उनको गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त होता था ऋषि ने उपदेश दिया कि पुरुषों को अपने कार्य में पत्नी की सहायता लेनी चाहिए।महर्षि
3. बालक बालिकाओं को शिक्षा लेने हेतु विद्यालयों में भेजने के लिए माता-पिता को अनिवार्य रूप से उत्तरदाई बनाया जाना चाहिए।
4. बालक बालिकाओं के लिएअलग-अलगपाठशालाएं होनी चाहिए।

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

5. बालिकाओं के शिक्षण संस्थानों में शिक्षक कर्मचारी तथा सेवक स्त्रियां ही होनी चाहिए तथा पुरुष शिक्षण संस्थानों में पुरुष शिक्षक एवं कर्मचारी होने चाहिए।
6. शिक्षण संस्थानों में सभी विद्यार्थियों के साथ एक जैसा व्यवहार सामान भोजन वस्त्र निवास एवं शिक्षा दी जाए।
7. शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों कोपारिवारिक वातावरण से पृथक पूर्ण रूप से स्वतंत्र रहकर शिक्षा प्राप्त करने कासमय एवं अवसर प्रदान किया जाए और उन्हें अधिक से अधिक परिवार से एवं घर से दूर रखा जाए।
8. शिक्षण संस्थाएं नगरों और ग्रामों से दूर होनी चाहिएजिससे कि विद्यार्थी नागरिक जीवन केतमामउलझन से दूर होकर विद्या अध्ययन में पूर्ण रूप से अपने आप को संलग्न कर सके।
9. विद्यार्थी कल में विद्यार्थियों का जीवन तपोमय में होना चाहिए ब्रह्मचर्य व्रत का अविरल रूप से पालन हो ।उनका जीवन तपस्वी इंद्रिय संयमी लोग रहित पवित्र संतुष्ट एवं भक्ति में होना चाहिए।
10. शिक्षण संस्थानों में गुरुजनों का संबंध अपने शिष्यों के सामने माता एवं पिता की तरह होना चाहिए। गुरु का यह कर्तव्य है कि वह शिष्य को कुमार्ग से हटकर सन्मार्ग पर ले जाए।
11. शिक्षा संस्थानों में जो व्यक्ति अध्यापन करें बहन न केवल विषय का विद्वान हो परंतु धार्मिक और सदाचारी हो गुरुवर्ग का विद्वान तपस्वी धार्मिक सदाचारी होना अति आवश्यक है।
12. अच्छा अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी के गुण और कर्म स्वभाव के आधार पर समावर्तन संस्कार के समय उसे आचार्य द्वारा वर्ण प्रदान किया जाना चाहिए।

महर्षि द्वारा प्रतिपादित से शिक्षा संबंधी विचार स्पष्ट रूप से भारत के समाज के सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं का निराकरण करने में सहायक है उन्होंने शिक्षा में सबको समान अधिकार और अवसर की बात कहकर सामाजिक और सांस्कृतिक विषमता को दूर करने का पूरा प्रयास किया भारतीय समाज में स्थापित जाति व्यवस्था का खंडन कियाऔर उन्होंने कहा कि वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं गुण और कर्म के आधार पर होनी चाहिए।

<u>शिक्षा का पाठ्यक्रम</u>-शिक्षा के पाठ्यक्रमके बारे में महर्षिदयानंद जी का अपना स्पष्ट विचार है उन्होंने प्राचीन परंपरा के अनुसार ही चार आश्रम में जीवन को माना है और यह माना कि ब्रह्मचर्य आश्रम विद्या अध्ययन का कल है इस काल मेंसाधारण बियाआज व्यवसाय ज्ञानभी दिया जाना चाहिए।

उन्होंने आयु के अनुसार पाठ्यक्रम को निम्न रूप में प्रस्तुत किया है-

GYANBODH
An International Multidisciplinary
Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

1 से 5 वर्ष तक का पाठ्यक्रम-महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनुसार यह कल परिपक्व बुद्धि और निर्माण का कल हैइस काल में पाठ्यक्रम में केवल आदतों का निर्माण और बुद्धि को साधारण प्रयोग में ले जाने हेतु विषय वस्तु रखा जाना चाहिएइसमें आचरण से संबंधित शिक्षा दी जाए विद्यार्थी को जिज्ञासु बनाया जाए खेलकूद की क्रियो क्रिया को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।

5 से 8 वर्ष तक का पाठ्यक्रम- इस आयु की शिक्षा मेंपिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है यह वास्तविक रूप से शिक्षा को प्रारंभ करने वाला समय कहलाता है इस काल में वर्ण और उसके उच्चारण का ज्ञान सभ्यचरण के लिए प्रोत्साहन और अभ्यास विद्यार्थी को कराया जाना चाहिए। शैक्षिक एवं स्वच्छ खुला वातावरण तथा खेलकूद के लिए भी समय दिया जाए। इसके साथ ही कुछ श्लोक पद सूत्र इत्यादि को भी विद्यार्थी को कंठस्थ कराया जाना चाहिए।

8 से 25 वर्ष तक का पाठ्यक्रम- विद्यार्थी के जीवन के नव वर्ष में उसे उपनयन संस्कार करके विद्या अध्ययन के लिए भेजा जाना चाहिएयह समय विद्यालय में अध्ययन करने का है इस काल में विद्या अध्ययन तथा विषयो का चयन बहुत ही सावधानी से किया जाना चाहिए।

8 से 11 वर्ष तक का पाठ्यक्रम- इस समययोग्य तथा सभी अक्षरों का उच्चारण माता-पिता आचार्य विद्यार्थी को करवा आचार्य तथा माता-पिता द्वारा दी गई उच्चारण की शिक्षा को वैज्ञानिक ढंग से दिया जाए। व्याकरण कीशिक्षा अच्छी तरीके से दिया जाए जिससे की भाषा संबंधी विद्वत्ता विद्यार्थी में आ सके। व्याकरण का विधिवत एवं कठिन ज्ञान दिया जाए जिससे शब्द वस्तु अर्थ आदि का सम्यक ज्ञान प्रदान हो इसे पढ़कर महाभाष्य पढ़ाया डेढ़ वर्ष में अष्टाध्याई तथा महाभारत में 3 वर्ष में व्याकरण होकर वैदिक तथा लौकिक शब्दों का व्याकरण दिशा कर पुनः शास्त्रों को शीघ्र सहज रूप में पढ़ाया जाए।

11 से 13 वर्ष का पाठ्यक्रम-यह काल वेद के अध्ययन की तैयारी का काल है इसमें पिंगला ,आचार्य छंद ग्रंथ जिसे वैदिक लौकिक छंदों का ज्ञान नवीन रचना श्लोक बनाने आदि की रीति भी विद्यार्थी अच्छे तरीके से सीखे। इस ग्रंथ और शोक की रचना तथा प्रस्ताव को 4 महीने में लिखाया पढ़ाया जाए।विद्यार्थी को साहित्य और धर्म ग्रंथो के अध्ययन में लगाया जाना चाहिए।विद्यार्थी को मनुस्मृति बाल्मीकि रामायण महाभारत जैसे महाकाव्य का अध्ययन कराया जाए और इस वर्ष भर में विद्यार्थी पढ़ ले ।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

13 से 15 वर्ष तक का पाठ्यक्रम-

11 से 13 वर्ष के अवधि में ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात विद्यार्थी को 2 वर्ष तक पूर्व में मीमांसा वैशेषिक न्याय,योग संख्या और वेदांत की शिक्षा प्रदान की जाए वेदांत पढ़ने के पूर्व ईश्, केन, कठ, प्रश्न मुंडक,मंडुक्य,तैतरिय, छांदोग्य इत्यादि 10 उपनिषदों का अध्ययन करें।

15 से 21 वर्ष का पाठ्यक्रम-

इस आयु में विद्यार्थी को एतरेय, शतपथ, सIम और गोपथ के सही चार वेदों का अध्ययन कराया जाएअध्ययन करते समय उच्चारण शब्द अर्थ संबंध और क्रियापद का पूरा ध्यान रखते हुए विद्यार्थी को शिक्षा प्रदान की जाए।

21 से 25 वर्ष तक का पाठ्यक्रम-

वेदों के अध्ययन कर लेने के पश्चात 4 वर्ष के भीतर उपयोगी विषयों इसमें चरक सुश्रुत,ऋषि मुनि प्रणीत ग्रंथ साहित्य धनुर्वेद राज्य संबंधी तथा प्रज्ञा संबंधी कार्य जिसमें सैन्य शिक्षा राजनीति अर्थशास्त्र कानून जैसे विषयों के साथ-साथ अथर्ववेद शिल्प विद्या विज्ञान कौशल क्रिया ज्योतिष विद्याज्यामिति बीजगणित अंकगणित भूगोल खगोल भूगोल आदि की शिक्षा विद्यार्थी को प्रदान की जाए।

शिक्षण प्रविधि-

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समूह में लिखा है कि यह नियम आत्म संयम एवं योगाभ्यास और ब्रह्मचर्य के द्वारा विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों को ब्रह्मचर्य के साथ शिक्षा देना और लेना चाहिए। इससे विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों का मन शिक्षण कार्य में संलग्न होगा और सफलता प्राप्त होगी।

संध्या उपासना यज्ञ हवन के द्वारा मां वाणी और शरीर को शुद्ध करके शिक्षण कार्य आरंभ किया जाना चाहिए।

उपदेश विधि- प्राचीन प्रथा के अनुसारज्ञान प्राप्ति के लिए मार्गदर्शन अध्यापन है उन्होंने यह स्पष्ट किया की द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और कन्याओं का यथायोग्य संस्कार करके गुरुकुल में विद्यार्थियों को विद्या अध्ययन के लिए भेजें। गुरुकुल में विद्यार्थी अपने विद्यार्थियों को उपदेश करें । महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुसार उपदेश से ही शिक्षा का आरंभ होता है।

स्वाध्याय विधि-स्वाध्याय का दो अर्थ है एक तो कर्तव्य के रूप में पढ़ने का काम और ज्ञान प्राप्ति का साधन इसमें बुद्धि और शक्ति दोनों का प्रयोग हो। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में तेतरीय उपनिषद का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया कि अध्ययन में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए उसका पूरा लाभ उठाओ और ज्ञान की वृद्धि करो।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

निरीक्षण विधि-आधुनिक समय में इस विधि का प्रयोग करने के लिए सभी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में प्रोत्साहित किया जाता है।महर्षि दयानंद जी ने स्पष्ट किया कि जो पढ़ना पढ़ना हो उसे अच्छी प्रकार से परीक्षा करके ही निश्चय किया जाना चाहिए।शरीर के सभी इंद्रियों को उसका एहसास होना चाहिए। शिक्षा का माध्यम निरीक्षण विचार और प्रदर्शन होना चाहिए जिसके माध्यम से ज्ञानेंद्रिय का प्रयोगसंवेदनशीलता और प्रत्यक्षीकरण हो सके

तर्क विधि-तर्क विधि भारत में एक अति प्राचीन विधि है महाभाष्य में तर्क के आधार पर ही सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति का संचालन किया जाता थाशास्त्रार्थ की परंपरा में जो वैदिक काल में शिक्षा की परीक्षा के लिए आवश्यक थी जिसे स्वामी दयानंद जी ने स्वयं तर्क विधि नाम दियाशास्त्रार्थ में प्रश्न उत्तर विधि को अपनाते हैं तो अपनी बात विचार एवं चिंतन हो स्पष्ट करने के लिए उसे तर्क के आधार पर सिद्ध करना होता हैतर्क करने के लिएस्वामी जी ने 8 प्राण को स्वीकार किया है जिम प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापति संभव एवं अभाव प्रमुख है।

व्यवहारिक विधि-इस विधि का उपयोगस्वामी जी ने व्यावहारिक ज्ञान देने हेतु आवश्यक बताया इसी प्रकार आयुर्वेद धनुर्वेद संगीत ग्रह कला विज्ञान आदि के अध्ययन के लिए व्यवहारिक विधि की उपयोगिता अत्यधिक है। संस्कृत एवं भाषा पढ़ने के लिए उच्चारण पर बोल दिया गया और संश्लेषण तथा विश्लेषण विधि को आवश्यक माना गया।

विद्यालय का स्वरूप- महर्षि दयानंद जी के अनुसार विद्यालय शांत वातावरण में तथा शहर एवं गांव से दूर होना चाहिए। आर्य समाज की स्थापना के साथ उन्होंने एक राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था एवं राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना के लिए प्रयत्न किया।आर्य समाज के विद्यालय वैदिक पाठशाला के रूप में स्थापित किए गए। महर्षि दयानंद जी का यह मानना था कि विद्यालय का वातावरण अत्यंत आकर्षक शांत तथा विद्या प्राप्त करने के लिए उत्प्रेरक होना चाहिए।विद्यालय का स्वरूप गुरुकुलों के रूप में होना चाहिए जिसमें संस्कृति का संरक्षण संस्कृत साहित्य का अध्ययन अध्यापन जीवन के आश्रम धर्म की स्थापना शिक्षा को राष्ट्रीय बनाने एवं प्रचलित परीक्षा पद्धति का पुनर्गठन मुख्य रूप से सम्मिलित किया गया ।

बालक एवं बालिकाओं के लिए पृथक विद्यालय होने चाहिए I 5 वर्ष के बाद के बालक बालिका एक दूसरे के विद्यालय में ना जा सके।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

विद्यालय में शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक मानसिक बौद्धिक एवं भावात्मक विकास संभव हो। गुरुकुल आवासीय होने चाहिए। विद्यालय में बिना किसी भेदभाव के सभी को समान शिक्षा देने की व्यवस्था होनी चाहिए।

आजीवन ब्रह्मचारी रहकर 25 वर्ष के बाद भी शिक्षा ग्रहण करने की व्यवस्था होनी चाहिए।

गुरुकुल में वेद, वेदांग, दर्शनशास्त्र, राज विद्या, आयुर्वेद, संगीत, नृत्य, शिल्प, गणित, ज्योतिष, भूगोल, भूगर्भ विज्ञान, यंत्रकला, आज तो कौशल भाषा इत्यादि का सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों प्रकार का ज्ञान दिया जाए। इस प्रकार से महर्षि दयानंद जी ने गुरुकुल के प्राचीन संस्कृति के साथ आधुनिक समय के ज्ञान विज्ञान एवं सभ्यता के केंद्र को भी स्थापित किया जिसमें भारतीय सादगी के साथ-साथ आधुनिक भारतीय समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यालय की भूमिका सुनिश्चित होनी चाहिए।

विद्यालय का जीवन

गुरुकुल की स्थापना प्राचीन शिक्षा पद्धति कोपूरा जीवित करने का एक सार्थक प्रयास था। यहां की जीवन पद्धति में विद्यार्थियों के रहन-सहन एवं गुरु शिष्य संबंध में प्राचीन भारतीय परंपराओं की अनूठी झलकप्राप्त होती थी। पाठ विधि और अध्यापन विधि में प्राचीन एवं नवीन विषयों का अनूठा समन्वय दिया गया। गुरुकुल का जीवन कुछ इस प्रकार का था-

- प्रातः सूर्योदय से पहले निद्रा का त्याग करना।
- हाथ मुंह धो कर इस प्रार्थना के लिए एकत्र होना और आठ प्रकार के मंत्र का उच्चारण करना ।
- उसके पश्चात विद्यार्थी स्नान करने के लिए जाते थे। सूर्योदय के पश्चात शौच व्यायामतथा स्नान आदि का कार्य होता था।
- विद्यार्थी एक्ट होकर संध्या का हवन करते थे बाद में उपदेश का कार्य होता था।
- स्वास्थ्य के नियमों का विशेष ध्यान दिया जाता थातथा भोजन में दूध एवं अन्य पदार्थ दिया जाता था।
- प्रातः भोजन के पश्चातअध्ययन का कार्य प्रारंभ हो जाता था और दोपहर तक चलता था।
- दोपहर 12:00 के बाद भोजनालय मेंसातवीं एवं पौष्टिक भोजन प्रदान किया जाता थातथा सभी प्रकार के तामसी भोजन वर्जित थे। भोजन का प्रारंभ भोजन के मंत्र के साथ होता था।
- कुछ विश्राम करने के पश्चात अध्ययन प्रारंभ किया जाता थाऔर सूर्यास्त से एक पहाड़ पूर्व तक चलती रहती थी।

- संध्या में गुरुकुल में विद्यार्थी एकत्र होकर संध्या हवन करते थे । उसके पश्चात रात्रि भोजन होता था ।
- रात्रि के 9:00 बजे सभी सोने के लिए विद्यार्थी बिस्तर पर चले जाते थे ।
- ब्रह्मचर्य में अवकाश के दिनों में भी घर जाने का निषेध था।

गुरुकुल का अनुशासन-महर्षि दयानंद जी एक आदर्शवादी पूर्णतया भारतीय संस्कृति एवं धर्म के प्रति समर्पितविचारक एवं शिक्षा शास्त्री थेइसीलिए वह कठोरशारीरिक एवं मानसिक अनुशासन के पक्ष में थे।अध्ययन के काल मेंब्रह्मचर्य पर जोर देते हुए उन्होंने दमन वादी प्रभाववादी और मुक्तिवादी तीनों प्रकार के अनुशासन के सिद्धांतों पर बोल दिया। उनके अनुसार माता-पिता एवं आचार्य को विद्यार्थियों के प्रत्येक गतिविधि पर अपनी दृष्टि रखनी चाहिए I अधिक लालन पालन से विद्यार्थी का जीवन पथ पृष्ठ हो सकता है। उनका विचार था कि व्यक्ति कोभावों और नैतिक आचरण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।महर्षि दयानंद जी सामाजिक अनुशासन को भी अत्यंत आवश्यक मानते थे।

शिक्षक और शिक्षार्थी का संबंध-स्वामी जी ने शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों से हीविशेष गुना की अपेक्षा की है I स्वामी जी ने माता-पिता और आचार्य तीनों को ही विद्यार्थी के लिए शिक्षक बताया हैउनके अनुसारमाता का कर्तव्य है कि गर्भाधान से लेकर जब तक उसकी पूरी विद्या ना पूरी हो उसे सुशीलता का उपदेश करें I बालक को शुद्ध उच्चारण एवं सुंदर वाणी में बोलने के लिए अभ्यास कारण। सदा सत्य बोलने के लिए अभी प्रेरित करें धैर्य और शौर्य से काम करने और सम्मान के साथ व्यवहार करने की शिक्षा देना भी माता का ही कार्य है।विभिन्न लोगों के प्रति व्यवहार संबंधी मंत्र श्लोक गद्य पद्य आदि कंठस्थ करवाना चाहिए ।

5 वर्ष के बाद विद्यार्थी की जिम्मेदारी पिता की होती है यहां पिता को माता द्वारा दिए गए ज्ञान आगे बढ़ाना है। पिता संतान के समक्ष धर्मयुक्त कार्य करें ।पिता विद्या धाम आचरण आदि का यथेष्ट ज्ञान अपने बालक को दें। 8 वर्ष होने पर पिता यज्ञोपवीत संस्कार के साथ ही विद्यार्थी को गुरुकुल में भेजें और 8 वर्ष के पश्चात बालक की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है।

स्वामी जी के अनुसार गुरु और शिष्य का संबंध प्राचीन वैदिक एवं ब्राह्मण कालीन युग का गुरु शिष्य संबंध के समान होना चाहिए । गुरु विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक एवं सामाजिक विकास के लिए सदैव प्रयत्न करें।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने भारत की संस्कृति एवं परंपराओं के अनुरूप शिक्षा की ऐसी पद्धति का प्रतिपादन किया जो प्राचीन वेद शास्त्रों के अध्ययन के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान के अध्ययन को भी समुचित स्थान देते हैं। उनके अनुसार सबको शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर मिलता है जिसके द्वारा सब कोई अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर अपने जीवन को सार्थक रूप से जीने के योग्य बन सकते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने वेदों की ओर लौट आओ कथन को शिक्षा पद्धति में पूर्णतया सार्थक किया है।

संदर्भः-

- स्वामी दयानंद सरस्वती (1875) सत्यार्थ प्रकाश, अजमेर प्रकाशन, राजस्थान
- अलतेकर डॉक्टर अनंत सदाशिव(1980) : प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, मनोहर प्रकाशन, जतनवर, वाराणसी
- भारतीय भवानी लाल (2002): स्वामी दयानंद जी का जीवन गाथा, शोध, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी